कोई ठग न सके

सुखिया झोंपड़ी के दरवाजे पर बैठी रस्सी बट रही थी। इतने में लल्ली वहां आ गई। "प्रणाम काकी" लल्ली ने सुखिया को प्रणाम किया। सुखी रहो, सुहागिन रहो। सुखिया ने आशीर्वाद दिया। "काकी, तुम मंजु दीदी को जानती हो?"

"कौन मंजु, वही महिला समाख्या वाली?"

"हां काकी वही। उसके घर चलना है। पर तुम भी साथ चलो तब।" फिर लल्ली ने पूरी बात बताई। उसके पति ने पंजाब से मनीआर्डर भेजा था। वह वहां फैक्टरी में काम करता था। लल्ली से पोस्टमैन ने कहा 20 रुपए खर्च करो तो मनीआर्डर मिलेगा। तुम्हारा पैसा आया है। हमारा मिठाई खाने का हक है। पिछली बार यही कहकर उसने दस रुपए लिए थे। बच्चा भी बीमार है। उसकी दवाई लानी है। डाक्टर बाबू उसे दूध पिलाने को कहते हैं। यह बीस रुपए की घूस डाक पिउन को क्यों दें? मगर क्या करे, इस बार भी देना पड़ा।

काकी ने रस्सी बटना बंद कर दिया। उन्हें याद आई, घूस तो उनको भी देना पड़ा था। जब भी मनीआर्डर आता डाकिया बीस, पच्चीस लेता है। सुखिया काकी का बेटा कलकत्ते में नौकरी करता है।

हम लोगों को कुछ करना चाहिए। गांव में बहुत घरों के मर्द बाहर काम करने गए हुए हैं। बहुत स्त्रियों के मनीआर्डर आते हैं। सबको घूस देना होता होगा। इन दोनों स्त्रियों ने महिला समूह की बैठक में यह बात उठाई। कई और महिलाओं ने भी यह शिकायत की।

दूसरे दिन सखी रामकली देवी के नेतृत्व में महिलाएं पोस्टमैन के पास गईं। उसे घेर कर खड़ी हो गईं। उन्होंने कहा तुम जो पैसा लेते हो वह घूस है। गैर-कानूनी है। कोई रुपया, दो रुपया खुशी से दे वह और बात है। पोस्टमैन ने आंखें दिखाईं। मुकर गया कि उसने कोई पैसा लिया था। स्त्रियां हारी नहीं।

बूढ़ी विधवा सतो देवी सामने आईं। और तो और दस रुपया हमसे भी लिया था। भूल गए डाक बाबू? औरतों ने पोस्टमैन को धिक्कारा। हम सब झूठ बोलते हैं क्या? जब वह नहीं माना तो सखी ने धमकी दी। हम सब ब्लाक ऑफिस जाएंगे। बी.डी.ओ. साहब से शिकायत हो जाएगी। वह भी लिखित।

"अरे हम कलेक्टर के पास जा सकते हैं।" सुखिया काकी ने कहा। अंत में पोस्टमैन को स्वीकार करना पड़ा कि उसने सबसे पैसे ऐंठ कर ही उनके मनीआर्डर उनको दिए थे। लिए गए पैसे बारी-बारी से लौटाने की बात की। उस समय उसके पास पैसे नहीं थे।

"बूढ़ी विधवा सतो देवी के दस रुपए सबसे पहले वापस करना," सभी स्त्रियों ने एक स्वर से कहा।

इसके बाद फिर पोस्टमैन ने कभी घूस नहीं लिया। मनीआर्डर लाता है तो वे अपनी खुशी से उसे कुछ देती हैं। कभी थोड़ा गुड़। कभी एक बतासा या एक प्याला चाय। सुखिया काकी ने बेटे की शादी की तो पोस्टमैन को मिठाई खिलाई। काकी बहू-बेटियों से बोली मैं तो बूढ़ी हुई पर तुम लोग तो पढ़ना सीखो कि कोई तुम्हें ठग न सके।

चर्चा के लिए कुछ प्रश्न:

1. घूस लेना और देना अपराध क्यों है?
2. अन्याय के खिलाफ़ किस प्रकार लड़ें?
3. महिलाओं को पोस्टमैन का सामना करने की हिम्मत कैसे और कहां से मिली? □

साभार: बिहार महिला समाख्या